

बन गयी सत्यम की दुल्हन

“उन्होंने समझाया कि मैं दो जिन्दगी जियूँ. जब मैं उनके साथ रहूँ तो उनकी बीवी बनकर ... और जब मैं कमरे पर रहूँ या कॉलेज में रहूँ तो विद्यार्थी बनकर रहूँ. सेक्स भी करूँ और पढ़ूँ भी. ...”

Story By: (ranichandu)

Posted: Tuesday, November 20th, 2018

Categories: [गे सेक्स स्टोरी](#)

Online version: [बन गयी सत्यम की दुल्हन](#)

बन गयी सत्यम की दुल्हन

धन्यवाद अन्तर्वासना, आपने मेरी पहली गे सेक्स स्टोरी

ऐसे बना चंद्रप्रकाश से चंदा रानी

को अपनी वेबसाइट पर प्रकाशित किया. इसे पढ़कर मुझे ठीक वैसा ही लगा जैसे वर्षों पहले सत्यम से गांड मरवाकर लगा था. मुझे मेरी वही अनुभूति लौटाने के लिए एक बार फिर शुक्रिया. पाठकों को भी मैं चंदा रानी नमस्ते कहती हूँ. मुझे कुछ इ मेल भी मिले. एक ने मुझसे सत्यम का मोबाइल नम्बर माँगा है क्योंकि वो भी गांडू है और उन्हें मेरे सत्यम से अपनी ठुकाई करवानी है. मैं उन्हें नम्बर नहीं दे सकती हूँ. जिन्होंने मेरी पहली सच्ची कहानी नहीं पढ़ी, वो उसे पढ़ लें ताकि आगे आने वाली मेरी कहानियाँ उन्हें आनन्द दे सके.

लीजिये अब मेरी दूसरी कहानी आपकी सेवा में पेश है.

मैं चन्द्रप्रकाश भोपाल में पढ़ने के लिए गया था और कमरा लेकर अकेला रहता था. सत्यम से गांड मरवाकर मैं कमरे पर आया. अंदर घुसते ही मैंने दरवाजा बंद कर लिया. अपने सारे कपड़े उतार दिए. खुद को ऊपर से नीचे देखा. मेरे निप्पल लाल सुर्ख हो गये थे. मैंने कांच लेकर गांड के पीछे किया तो कूल्हों पर दांत के निशान ही निशान. सत्यम ने खूब काटा था मेरी गांड पर. मैंने उंगली गांड के छेद पर रखी, मीठा मीठा दर्द हुआ.

मैं आँख बंद करके खुद को पुकारने लगा- चंदा चंदा.

मुझे बहुत अच्छा लगा. मैंने दोनों हाथों से अपने निप्पल मसलना शुरू कर दिया. मेरे धीमी धीमी सिसकियों के बीच मेरी आवाज भी आने लगी- सत्यम. मेरे पति. मुझे ले चलो यहाँ से. मैं कैसे रहूंगी यहाँ पर.

मुझे इस बात पर आश्चर्य हुआ कि आज मेरा लंड लटका हुआ था. वह खड़ा नहीं हुआ.

पहले जरा सी सेक्स सम्बन्धी बात पर झटके देने लगता था. मैंने कूल्हों पर हाथ फिराया. अब यही मेरी मस्ती के आधार है. अब मुझे मेरे लंड की नहीं दूसरों के लंड की जरूरत है. काश मेरे लंड की जगह चूत उग जाये.

मैंने थैली में से वो चीजें निकालीं जो मुझे सत्यम ने दी थीं. लिपस्टिक खोलकर मैंने अपने होंठ रंग लिए, बिंदी लगा ली, पावडर चेहरे पर मल लिया. काजल मुझे ठीक से लगाना नहीं आया. मैंने ब्रा और पेंटी पहन ली. अपने तकिये का एक कोना ब्लेड से काटकर उसमें से रुई निकालकर ब्रा में भर लिया. मैंने अपने सीने पर दो बोबे उगा लिए और धीरे धीरे दबाने लगा. मैं दिन भर उन्हीं कपड़ों में रहा. रात को वैसे ही सो गया. सपने में भी सत्यम ही आये.

जैसे तैसे रात कटी.

सुबह उठकर मैंने अपने आपको ठीक किया. मेरा कमरा चौथी मंजिल पर था. मैं गैलरी में खड़ा होकर मंजन करने लगा. जैसे ही मेरी निगाहें नीचे गईं तो मैंने देखा सामने पान की दूकान पर सत्यम खड़े थे और वे ऊपर ही देख रहे थे. हमारी निगाह मिलते ही उन्होंने मुझे हाथ का इशारा किया और कुछ बोले. मैं इतनी ऊपर था कि मुझे कुछ भी सुनाई नहीं दे रहा था.

अब मैं क्या करूं ?

तभी मुझे आइडिया आया. मैंने अपने कंधे पर रखे टॉवल को नीचे गिरा दिया. वो हवा में लहराता लहराता सड़क पर दुकान के कुछ आगे जाकर गिर गया. सत्यम ने उसे उठाया और मुझे इशारा किया.

मैं तेजी से नीचे आया. सत्यम के हाथों से टॉवल लिया. दोनों ने एक दूसरे को देखा. बातचीत प्रारम्भ हुई- कैसी हो चंदा ; मेरी चंदा ?

मैं- मैं ठीक हूँ. रात भर आपको याद करता रहा.

सत्यम- एक बात मानोगी चंदा ? मुझसे बात करते वक्त तुम लड़की की तरह बोलो ना प्लीज ?

मैं- जी ठीक है.

सत्यम- चंदा ! मैं रविवार का रास्ता नहीं देख पाऊंगा. आप अभी चलो.

मैं- सुनिए ! आप भी मेरी एक बात मानिए. आप मुझे आप मत कहिये. आप मुझे तू कहिये.

सत्यम- ठीक है. तू चल ना अभी मेरे साथ.

मैं- मैं भी नहीं रह पाऊंगी इतने दिन अब आपके बिना. आप चलिए मैं थोड़ी देर में आती हूँ. मुझे खाना भी बनाना है. भोजन करके आती हूँ दस बजे तक !

सत्यम- भोजन बाहर करेंगे. तू जल्दी आ जा.

मैं- ठीक है मैं नहाकर आती हूँ.

सत्यम ने मेरे हाथों को पकड़ा और जोर से दबाया. उनकी आँखें भीगी हुई थीं. वो अपनी बीवी को बहुत मिस कर रहे थे.

मैंने जल्दी से स्नान किया. सत्यम की दी हुई सारी वस्तुएं थैली में भरी और आधे घंटे में मैं सत्यम के घर पहुँच गया.

सत्यम ने मुझे अपने सीने से लिपटा लिया और किस करने लगे. वो फिर रोने लगे. रोते रोते बोले- चंदा. अब मुझे छोड़कर मत जाना प्लीज. फिर मुझे अलग करके बोले- तू बैठ. मैं कुछ खाने को लेकर आता हूँ. मेरा जवाब सुनने के पहले ही सत्यम निकल गये.

मैंने दरवाजा बंद किया, थैली में से सारी चीजें निकालीं, अपना मेकअप किया. आज काजल थोड़ा ठीक लग गया था. ब्रा पहनी, रुई से बोबे बनाये और सलवार कुर्ती पहन ली. कांच में देखा तो मैं एकदम लड़की लग रही थी. मैंने खुद को ही आँख मारी और हवाई किस दिया.

सत्यम को आने में चालीस मिनट लग गये. दरवाजा खोलकर मैं दरवाजे के पीछे छिप गया. उन्होंने दरवाजा बंद किया और मुझे देखते ही रह गये. अपने हाथ से दुपट्टे का पल्लू बनाकर मेरे सिर पर रखा. मैंने आँखें बंद कर ली. उन्होंने मेरी ठोड़ी पकड़कर चेहरा ऊपर किया. मेरी पीठ पर हाथ रखकर अपने से लिपटा लिया. पीठ पर हाथ फेरते फेरते वो मेरे कूल्हों पर हाथ ले गये और उन्हें धीरे धीरे दबाने लगे. फिर बोले- मैं तुम्हें एक चीज दिखाता हूँ चंदा.

उन्होंने अलमारी खोलकर एक एलबम निकाला और मेरे सामने एक तस्वीर कर दी. कहने लगे- यह है मेरी बीवी चांदनी. देखो तो तुम इन कपड़ों में बिलकुल चांदनी जैसी लग रही हो. बिलकुल मेरी चंदा दिख रही हो.

मैंने तस्वीर को देखा तो देखता ही रह गया. वाकई वह हूबहू मेरे जैसी दिख रही थी. वही नाक नक्श. वही रंग रूप.

मैं- अब क्या करना है, कहिये ?

सत्यम- एक वचन दो ?

मैं- बोलिए.

सत्यम- सदा मेरी रहोगी ना. अब तुम्हें गांड मराने की आदत पड़ जायेगी तो तुम किसी और से तो नहीं मरवाओगी ना ?

मैं- पता नहीं, अब क्या होगा, और आपकी बनकर क्यों रहूँ. क्या आप मेरे पति हैं ?

सत्यम- हाँ मैं तेरा पति हूँ, तू मेरी पत्नी है.

मैं- हिशू, कहाँ हुई हमारी शादी ?

अचानक सत्यम को जाने क्या हुआ, वो बोले- चल मैं पहले तुझसे शादी करता हूँ.

मैंने बहुत कहा कि अरे मैं तो मजाक कर रही हूँ. पर वो नहीं माने. उन्होंने मुझे थोड़ा ठीक से तैयार किया. अपनी बीवी का एक बड़ा दुपट्टा लेकर मेरे सिर और चेहरे को ढक दिया.

हम रास्ते से दो पुष्पहार और मिठाई लेकर मन्दिर पहुंचे. उन्होंने मुझे कह दिया था कि मैं कुछ बोलूँ नहीं और निगाहें नीचे ही रखूँ. मैं बिल्कुल लड़की लग रही थी. मन्दिर के पंडितजी से सत्यम ने कुछ बात की. पंडित जी ने सहमति में सिर हिलाया. कुछ मन्त्र पढ़े. सत्यम ने मेरे गले में माला डाली और मैंने उनके गले में. सत्यम ने दुपट्टे के नीचे से मेरी मांग में सिंदूर भरा. पंडित जी को दक्षिणा दी. मिठाई का प्रसाद बांटा. मुझे थामकर सत्यम मन्दिर से बाहर आये और ऑटो में बैठाकर अपने घर ले आये.

मेरी शादी हो गयी. मैं सत्यम की ब्याहता बन गयी. मैंने घर आकर सत्यम के साथ भोजन किया.

मेरी गांड तो वो पहले ही मार चुके थे. पर विवाह के बाद यह पहला मिलन था.

सत्यम ने मुझे बेड पर बैठाया. फिर मेरा घूँघट हटाया और मुंह दिखाई में मुझे एक सोने का हार दिया. यह उनकी बीवी का था. मैंने झुककर उनके चरण स्पर्श किये.

सत्यम ने कहा कि वो मेरे साथ ठीक उसी तरह से सुहागरात मनाएंगे जैसे उन्होंने उनकी पहली बीवी चांदनी के साथ मनाई थी.

उन्होंने पहले मेरे पैरों को चूमा. पंजों के हर भाग पर चूमते हुए वो आगे बढ़े. मेरी उम्र अठारह वर्ष से ऊपर हो गयी थी लेकिन मेरे शरीर पर बाल नहीं थे. पूरा शरीर लड़कियों की तरह चिकना था. पंजे एक बाद वो पैरों को चूमते हुए जाँघों तक आये. फिर मेरे सारे कपड़े निकालकर उन्होंने मेरे शरीर पर कोई दस हजार चुम्बन किये होंगे. केवल मेरे लंड और उसके आसपास के भाग को छोड़कर उन्होंने सब जगह चूमा. अब भी मेरा लंड खड़ा नहीं हुआ था. मुझे अच्छा लगा.

सत्यम ने बताया कि चांदनी को दो घंटे तक तो वे चूमते ही रहे थे.

फिर उन्होंने बताया कि चांदनी बहुत शरमा रही थी. मैं भी शरमाने की एक्टिंग करने लगा.

उसके बाद उन्होंने अपने कपड़े खोल दिए. उनका लंड कल से भी बड़ा लग रहा था. आज उनकी झांट के बाल कटे हुए थे. मेरा हाथ पकड़कर अपने लंड पर रख दिया और पूछा- कैसा लगा ?

मैंने कहा- बहुत अच्छा है.

उन्होंने कहा- चांदनी के साथ पहली बार तो मैं मुंह में ही झड़ गया था.

मैं उनकी भावना समझ गया और लंड चूसने लगा. पंद्रह मिनट तक चूसने के बाद वे जोर जोर से धक्के लगाने लगे. और अगले ही मिनट मुंह में झड़ गये.

मैंने कहा- क्या मैं आपकी चांदनी से कम हूँ जी ?

सत्यम मुस्कुरा दिए.

मैंने सत्यम को पानी लाकर दिया... सत्यम ने मुझे अपनी गोद में बैठा लिया और अपने भूतकाल के बारे में बताते हुए मेरे निप्पल मसलते रहे.

थोड़ी देर में उनका लंड फिर तैयार हो गया.

उन्होंने मुझे उलटा लिटा दिया और पैर चौड़े कर दिए.

मेरी गांड की तारीफ़ करते हुए तेल डाला. छेद कल ही खुल चुका था, उन्होंने अपना लंड मेरी गांड पर रखा और दो तीन झटके में पूरा अंदर उतार दिया. आज ज्यादा दर्द नहीं हुआ. चूँकि सत्यम अभी झड़े थे अतः दूसरा दौर लम्बा चला. बीस पच्चीस मिनट तक उन्होंने मेरी गांड मार कर मजा लिया.

मैंने भी उनका भरपूर सहयोग किया, मैं भूल गया था कि मैं एक छोटे से कस्बे से निकलकर भोपाल पढ़ने आया हूँ. मेरी दुनिया ही बदल गयी. उस रात मुझे सत्यम ने मेरे कमरे में नहीं आने दिया. रात में चार बार मेरी गांड मारी. मुझे वाकई लगा कि मैं उनकी बीवी हूँ.

दूसरे दिन उन्होंने मुझे पांच सौ रूपये दिए और समझाया कि मैं दो जिन्दगी जियूँ. जब मैं उनके साथ रहूँ तो उनकी बीवी बनकर रहूँ और जब मैं कमरे पर रहूँ या कॉलेज में रहूँ तो

विद्यार्थी बनकर रहूँ. सेक्स भी करूँ और पढ़ूँ भी.

शुरू में मुझे यह कठिन लगा. लेकिन दस पन्द्रह दिन तक रोज़ गांड मरवाने के बाद मैंने दोनों जिन्दगी शुरू कर दी. मैं चंदा भी रही और चंद्रप्रकाश भी.

यह थी मेरी चंद्रप्रकाश से चंदा बनने और चंदा से सत्यम की बीवी बनने की कहानी. एकदम सच्ची कहानी है. आगे सत्यम के साथ मेरा और कैसा जीवन चला. सत्यम के अलावा कैसे और कौन दो सौ मर्द मेरी जिन्दगी में आये. यह सब मैं अगली कहानी में बताऊँगी.

आपको कहानी अच्छी लग रही है या नहीं, आप मुझे ranichanduu@gmail.com पर मेल करें.

आप सभी की चंदा. और हाँ मुझे चन्द्रप्रकाश न कहें. मुझे चंदा सुनना अच्छा लगता है.

